प्रासङ्गिकं व्याकरणम्

1. वर्णविचारः

भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है । जैसे क्, ख्, अ, इ इत्यादि । इन वर्णों के संयोग से शब्द बनते हैं । वर्ण समूह को "वर्णमाला" में रखते हैं । वर्णों के दो भेद संस्कृत में माने गये हैं - **स्वर वर्ण** तथा **व्यञ्जन वर्ण** । अपने उच्चारण में किसी की अपेक्षा न रखने वाले को **स्वर** कहते हैं (स्वयं राजन्ते इति स्वराः) । जिनके उच्चारण में स्वर सहायक होता है वे **व्यञ्जन** कहलाते हैं (अन्वग् भवति व्यञ्जनम्) । अ, आ, इ, ई आदि स्वर हैं जबकि क्, ख् आदि व्यञ्जन हैं । प्राचीन काल में केवल व्यञ्जनों को **'वर्ण'** कहते थे और स्वरों को "अक्षर" कहा जाता था । किन्तु अब दोनों को वर्ण में समेटा जाता है ।

स्वर वर्ण को **मूलस्वर** तथा **सन्ध्यक्षर** - दो भागों में विभक्त किया गया है । अ, इ, उ, ऋ **(ऌ भी)** ये मूल स्वर हैं जबकि ए, ऐ, ओ, औ ये चारों **सन्ध्यक्षर** कहलाते हैं। वस्तुतः इनका निर्माण दो मूल स्वरों से होता है (अ + इ = ए, अ + उ = ओ, आ + इ = ऐ, आ + उ = औ) । यही कारण है कि अयादि संधि में इन सन्ध्यक्षरों से अय्, अव्, आय्, आव् हो जाते हैं क्योंकि इ, उ का परिवर्तन दूसरी सन्धि में य्, व् हो जाता है । **मूलस्वरों** के तीन-तीन भेद हैं **ह्रस्व, दीर्घ** और **प्लुत** । ह्रस्व स्वर तो इन्हीं रूपों में लिखे जाते हैं किन्तु दीर्घ स्वरों को लिखने में लिपिगत परिवर्तन होता है - आ, ई, ऊ, ॠ। प्लुत लिखने के लिए इन्हीं के बाद तीन का अंक लगाया जाता है । आ 3, ई 3, ऊ 3, ऋ 3 । इनका प्रयोग दूर से पुकारने में होता है । जैसे - हे राम = हे रामा 3 ! स्मरणीय है कि सन्ध्यक्षर दीर्घ होते हैं ।

व्यञ्जनों को तीन वर्गों में विभक्त करते हैं -

1. स्पर्श वर्ण - कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग (25 वर्ण)
2. अन्तःस्थ वर्ण - य् , र्, ल्, व् (4 वर्ण)
3. ऊष्म वर्ण - श्, ष्, स्, ह् (4 वर्ण)

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

Developed by: ABSOL www.absol.in

सभी व्यञ्जनों को सामान्यतः हल् कहते हैं जो एक प्रत्याहार है । इसे पूर्व के एक पाठ में समझाया गया है। इसीलिए व्यञ्जनों की लिपि में हलन्त का प्रयोग होता है । जैसे मुनीन् में न् 'हलन्त' कहलाता है क्योंकि इसका अन्तिम 'न' शुद्ध हल् या व्यञ्जन है, स्वर से जुड़ा नहीं है ।

व्यञ्जनों को उच्चारण स्थानों तथा प्रयत्नों के आधार पर पुनः वर्गीकृत किया जाता है । **कवर्ग** (क्, ख्, ग्, घ् ङ्) का उच्चारण कण्ठ से होने से इन वर्णों को **कण्ठ्य** कहते हैं । **चवर्ग तालव्य** कहलाता है, **टवर्ग 'मूर्धन्य'** है, **तवर्ग 'दन्त्य'** है जबकि **पवर्ग 'ओष्ठ्य'** है । अन्त:स्थ वर्णों में **य् तालव्य** है, **र् मूर्धन्य, ल् दन्त्य** तथा **व् दन्तोष्ठ्य** है । **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं- श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

स्वरों के भी अपने-अपने उच्चारण स्थान हैं। जैसे अ (कण्ठ्य), इ (तालव्य), उ (ओष्ठ्य), ऋ (मूर्धन्य), लृ (दन्त्य)। दीर्घ और प्लुत स्वरों के भी यही स्थान हैं। सन्ध्यक्षरों के उच्चारण में दो-दो स्थानों का उपयोग होता है । जैसे ए, ऐ (कण्ठ-तालु), ओ, औ (कण्ठ - ओष्ठ)। इन उच्चारण स्थानों की स्मरण रखने से अनेक स्वरसन्धियों का रहस्य समझ में आता है।

उच्चारण-स्थान से सम्बद्ध सूत्र सप्तम वर्ग की संस्कृत पाठ्य-पुस्तक (अमृता-द्वितीय भाग) के 'प्रासङ्गिकं व्याकरणम्' में देखे जा सकते हैं । उन्हीं का विवरण यहाँ दूसरे रूप में दिया गया है।

आभ्यन्तर तथा बाह्य प्रयत्न

किसी भी वर्ण के (स्वर या व्यञ्जन) के उच्चारण के लिए उच्चारण-स्थानों में एवं उनके बाहर कण्ठ-नली में किये जाने वाले प्रयास को 'प्रयत्न' कहते हैं । मानव अपनी इच्छा को व्यक्त करने के लिए फेफड़े से वायु-सञ्चार करता है जो कण्ठ एवं मुख विवर से टकरा कर ध्वनियों को उत्पन्न करता है । इसमें कुछ प्रयास करना ही

पड़ता है । प्रयास के मृदु होने या तीव्र होने के कारण उच्चारण भी मृदु या तीव्र होता है। फुसफुसाहट तक बिना प्रयास के नहीं हो सकती । अत: उच्चारण-प्रक्रिया में प्रयत्न का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है ।

प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं - **आभ्यन्तर** तथा **बाह्य** । **आभ्यन्तर प्रयत्न** कण्ठ से लेकर ओष्ठ तक के बीच में होने वाले प्रयत्न को कहते हैं। ये सभी उच्चारण- स्थान हैं, इनका परस्पर सट जाना या आधा सटा होना या बिल्कुल पृथक् होना आभ्यन्तर प्रयत्नों का निर्णय करता है। **बाह्य प्रयत्न** वस्तुत: उच्चारण-स्थानों के बाहर अर्थात् कण्ठ के भीतर ही वायु के रहने की स्थिति में होते हैं । यद्यपि उदात्त आदि प्रयत्न उच्चारण-स्थान के भीतर ही होते हैं फिर भी वे बाह्य कहलाते हैं ।

आभ्यन्तर प्रयत्न के पाँच भेद हैं -

1. **स्पृष्ट** - क् से लेकर म् तक पचीस (25) व्यञ्जनों के उच्चारण में उच्चारण-स्थान या तो स्वयं या जिह्वा के अग्र भाग से सट जाते हैं । इसीलिए इन वर्णों को स्पर्श कहते हैं । इस प्रकार उच्चारण-स्थानों के भीतर स्पर्श की क्रिया होने से स्पृष्ट आभ्यन्तर प्रयत्न है ।
2. **ईषत्-स्पृष्ट** - अन्त:स्थ वर्णों के उच्चारण में ईषत्-स्पृष्ट प्रयत्न होता है । य्, र्, ल्, व् का उच्चारण करते हुए प्रतीत होता है कि जिह्वाग्र से उच्चारण स्थान लगभग स्पर्श की स्थिति में है । इसीलिए ईषत् (थोड़ा) स्पृष्ट नामक प्रयत्न होता है ।
3. **विवृत** - सभी स्वर वर्णों के उच्चारण में उच्चारण-स्थान परस्पर खुले रहते हैं, वायु का निर्गमन सरलता से हो जाता है। इसलिए प्रयत्न को विवृत कहते हैं ।
4. **ईषद्-विवृत** - ऊष्म वर्णों के उच्चारण में यह प्रयत्न लगता है । श्, ष्, स्, ह् का उच्चारण करते हुए इसका अनुभव किया जा सकता है कि उच्चारण-स्थान कुछ-कुछ खुले रहते हैं ।

5. **संवृत** – यह व्याकरण की प्रक्रिया की दृष्टि से माना गया प्रयत्न है । ह्रस्व अ के उच्चारण में यह स्वीकृत है।

बाह्य प्रयत्न वस्तुतः उच्चारण-प्रक्रिया की सूक्ष्मता की व्याख्या करते हैं । इन्हें चार वर्गों में देखा जा सकता है।

1. **विवार, श्वास, अघोष** – वर्गों के प्रथम द्वितीय वर्ण (क्-ख्, च्-छ्, ट्-ठ्, त्-थ्, प्-फ्) एवं श्, ष्, स् – ये **अघोष** कहलाते हैं । इनके उच्चारण में कण्ठ के नीचे स्थित स्वर-यन्त्र के द्वार खुले होते हैं । इसलिए इनके उच्चारण में तीव्र ध्वनि नहीं होती । स्वर-यन्त्र के खुले होने से इन्हें **विवार** कहा जाता है । विना विशेष प्रयत्न के उच्चारण से इन्हें **श्वास** भी कहते हैं ।
2. **संवार, नाद, घोष** – अन्य व्यञ्जन **घोष** प्रयत्न में आते हैं । इनके उच्चारण में विशेष ध्वनि (नाद) होती है, स्वर-यन्त्र के द्वारों को प्रयत्नपूर्वक खुलवाना पड़ता है । ग् – घ् – ङ्, ज्-झ्-ञ् इत्यादि के उच्चारण में ये प्रयत्न होते हैं । सन्धियों में क् का ग् होना च् का ज् होना इत्यादि अघोष के घोष में रूपान्तरण का उदाहरण है।
3. **अल्पप्राण, महाप्राण** – जिन वर्णों के उच्चारण में कम वायु लगे उन्हें **अल्पप्राण** कहते हैं । जैसे क्, ग्, ङ् इत्यादि। दूसरी ओर जिनके उच्चारण में दुहरी (अधिक) वायु का प्रयोग होता है वे **महाप्राण** हैं । इनमें ह के रूप में दूसरी ध्वनि जुड़ी रहती है । जैसे- ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, ह् । अल्पप्राणों के साथ **ह** का उच्चारण होने से महाप्राण होता है ।
4. **उदात्त, अनुदात्त, स्वरित** – इनका महत्त्व वैदिक भाषा के उच्चारण में है । उच्चारण-स्थान में उच्चतम स्थान पर जीभ को रखकर 'उदात्त' का, निम्नतम स्थान से अनुदात्त का और मध्यस्थान से स्वरित का उच्चारण होता है । स्मरणीय

है कि ये तीनों भेद केवल स्वर वर्णों के होते हैं । सामान्य उच्चारण में इनका उपयोग नहीं होता ।

पदविचार : (Morphology) : वर्णों के योग से जो अर्थबोधक इकाई बनती है उसे 'शब्द' कहते हैं । शब्द बहुत व्यापक अर्थ में आता है । यहाँ तक कि अनर्थक ध्वनि को भी शब्द कहते हैं (ध्वनिः शब्दः) जैसे मेघ का शब्द या किसी वस्तु के गिरने का शब्द । पूरे वाक्य को भी शब्द कहने की परम्परा रही है **(आप्तवाक्यं शब्दः)**। इस व्यापक अर्थ-शृंखला में यहाँ सार्थक ध्वनि-समूह को ही शब्द कहना प्रासंगिक है । जैसे राम, गज, गम् इत्यादि । शब्द जब वाक्य में प्रयोग करने के योग्य हो जाता है तब उसे केवल शब्द न कहकर पारिभाषिक दृष्टि से **'पद'** (Term) कहते हैं। सामान्यतः संस्कृत में **तीन** प्रकार के **पद** होते हैं - **सुबन्त पद** (बालकः, राज्ञः, वयम्, चत्वारि इत्यादि), **तिङन्त पद** (गच्छति, अपठत्, करिष्यति, धावामः इत्यादि) तथा **अव्यय** पद (पुनः, कृत्वा, सर्वथा, शनैः, कथमपि इत्यादि)। सभी पद शब्द हैं, किन्तु सभी शब्द पद नहीं हैं।

सुबन्त पदों में लिंग, वचन, विभक्ति अनिवार्य होते हैं । इसी प्रकार तिङन्त पदों में पुरुष, वचन तथा लकार अनिवार्य हैं । **तिङन्त** पदों में विभक्ति और लिङ्ग नहीं होते किन्तु क्रिया के रूप में जो कृदन्त पद होते हैं (जो वस्तुतः सुबन्त ही हैं) वे लिङ्ग की विशिष्टता रखते हैं । जैसे - बालकः गतवान्, सीता गतवती । किन्तु लकार के रूप में जो तिङन्त होगा वह लिङ्ग के कारण भिन्नता नहीं रखेगा । जैसे-बालकः अगच्छत्, सीता अगच्छत् ।

अव्यय पद में लिङ्ग, वचन या विभक्ति के प्रभाव नहीं पड़ते वह सदा एकरूप रहता है । **'व्यय'** का अर्थ **विकार** है । जिसमें विकार नहीं होता, वह अव्यय है । इसका भी वाक्य में स्वतन्त्र प्रयोग होता है । जैसे रमा शीघ्रं चलति । रमा सुबन्त है, शीघ्रम् अव्यय है, चलति तिङन्त है । ये सभी पद हैं । पद भी किसी-न-किसी रूप में

शब्द हैं किन्तु सभी शब्द पद नहीं हो सकते । पद होने के लिए सुप् या तिङ् लगना अथवा अव्यय के रूप में होना अनिवार्य है।

2. **सन्धिविचार : (Euphomic Combination) :** संस्कृतभाषा की विशेषताओं में एक उल्लेखनीय बात है कि यहाँ सन्धिबद्ध पदों का अत्यधिक प्रयोग होता है। इसके कारण संस्कृत की कठिनता से लोग भड़क उठते हैं । गीता, नीतिश्लोक जैसे सुरुचिपूर्ण साहित्य में भी सन्धियों को देखकर उच्चारण करने की कठिनाई का सामान्य लोग प्रतिदिन साक्षात्कार करते हैं। किन्तु सन्धियाँ जहाँ संस्कृत की विशिष्टता हैं वहीं इनका सही ज्ञान हो जाने पर भाषा के सौन्दर्य का एवं इनसे होने वाले अनुप्रासों की सुषमा का रसास्वादन किया जा सकता है । सन्धियों की उपयोगिता संस्कृत भाषा में निम्नांकित रूप से देखी जा सकती है –

1. सन्धियाँ संस्कृत के वर्णों पर आश्रित हैं, वर्णों का उच्चारण-स्थान जानना संस्कृत सन्धियों के लिए अनिवार्य है। इससे संधियों से वर्णविचार का परिचय स्वतः हो जाता है और विश्व की भाषाओं में संस्कृत ध्वनि-विज्ञान (Sanskrit Phonetics) की महत्ता समझ में आती है । यदि + अपि = यद्यपि, इसमें इ का य् क्यों हुआ इसे जानने के लिए समझना होगा कि इ और य् दोनों का उच्चारण स्थान तालु है। इस प्रकार सन्धियाँ मनमाने ढंग से नहीं होती अपितु वर्णों के परिवर्तन में वैज्ञानिकता है । वाक् + ईशः = वागीशः, यहाँ क् का ग् हो जाना न केवल उच्चारण स्थान की समता से है अपितु अघोष वर्ण का घोष वर्ण में परिवर्तन उच्चारण के स्वाभाविक विकास का द्योतक है । इस प्रकार सन्धियों में जो तथाकथित वर्ण-परिवर्तन होते हैं वे संस्कृत ध्वनि-विज्ञान की मौलिक विशिष्टता अंकित करते हैं ।
2. सन्धियों के कारण संस्कृत में संक्षिप्त और संश्लेषण की स्थिति आती है । इससे कभी-कभी उच्चारण का सौन्दर्य भी झलकता है। जैसे – रविः + अपि =

रविरपि । दोनों के उच्चारण में स्वभावतः सौन्दर्य का अन्तर प्रतीत होगा । इसी प्रकार स्मृता + अपि = स्मृतापि में अन्तर देखें । चार वर्ण तीन वर्णों में बदल गये । संस्कृत पद्य-रचना में इसका बहुत महत्त्व होता है ।

3. संस्कृत भाषा संयोगात्मक (Synthetical) है अर्थात् शब्दों के साथ विभक्तियाँ जुड़ी रहती हैं । इसलिए पदों को कहीं भी रख दें, अन्वय करने में असुविधा नहीं होती । सन्धियों के कारण ऐसे विभिन्न स्थलों में रखे हुए पदों से अद्‌भुत नाद-सौन्दर्य उत्पन्न होता है । दण्डी के ''दशकुमारचरित'' में आए हुए एक वाक्य को लें - **असत्येनास्य नास्यं संसृज्यते** । सन्धियों के कारण **''नास्य नास्यं''** में नाद-सौन्दर्य उत्पन्न है । वस्तुतः सन्धि तोड़ देने पर यह वाक्य होगा - **असत्येन अस्य न आस्यं संसृज्यते** । अर्थात् असत्य से इसके मुख का कोई संसर्ग नहीं होता, यह झूठ नहीं बोलता। इतनी साधारण बात को कवि ने **पदचयन, पदस्थापन** तथा **सन्धि** - इन तीनों का प्रयोग करके अद्‌भुत चमत्कार किया है। सन्धियाँ सामान्य विकृत शब्दों में भी सुन्दरता ला देती हैं, उनका संक्षेपण होने से पद्यों में संस्कृत कवियों ने सन्धियों का अधिकतम प्रयोग किया है ।

4. पद्य-रचना में सन्धि का महत्त्व कितना है यह कोई अनुभवी ही जान सकता है । सन्धियों के कारण छन्दों के चरण में वर्णलाभ होता है । जैसे एक पद्य का चरण है - **विषादप्यमृतं ग्राह्यं......** । इसे सन्धि तोड़कर अन्वित करें तो वाक्य बनेगा- **विषात् अपि अमृतम् ग्राह्यम्** । इसमें छन्द का चरण आठ (8) अक्षर ही चाहिए। अपि और अमृतम् मिलकर पाँच के स्थान पर चार स्वर ही हो जाते हैं और छन्द को सही बना देते हैं । इसी प्रकार त् का दकार हो जाना, म् का अनुस्वार हो जाना भी अनुकूलता उत्पन्न करता है । मकार का स्वर वर्ण से सम्मेलन तथा अनुस्वार में परिवर्तन भी संस्कृत सन्धि की महत्ता का द्योतक है।

जैसे- अहम् + एव = अहमेव, कथम् + इव = कथमिव, वित्तम् + बन्धुः = वित्तं बन्धुः इत्यादि उदाहरण लिए जा सकते हैं । सन्धियों के कारण कभी-कभी पूरा चरण इसी प्रकार एकशब्दात्मक प्रतीत होता है । जिससे संस्कृत की संश्लिष्टता पर प्रकाश पड़ता है । जैसे रघुवंश महाकाव्य में रघुवंशी राजाओं की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कालिदास ने लिखा है -

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम् ।
आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम् ॥

अर्थात् उन रघुवंशी राजाओं का वर्णन करूंगा जो जन्म से होने वाले संस्कारों के कारण पवित्र थे, फल जब तक न मिल जाए तबतक काम करते रहते थे । समुद्रपर्यन्त पृथ्वी पर जिनका अधिकार था और स्वर्ग तक (आ नाक) जिनके रथ का मार्ग बना हुआ था ।

इस प्रकार सन्धि के विविध उपयोगों को देखा जा सकता है।

3. सर्वनाम विशेषणं क्रियाविशेषणं च :

(क) सर्वनाम : व्याकरण में सामान्यतः सर्वनाम की परिभाषा यह दी गयी है कि संज्ञा शब्द के स्थान पर आने वाला शब्द सर्वनाम होता है । जैसे वह, यह, कौन, तुम, हम इत्यादि । यह परम्परा अंग्रेजी व्याकरण से चली है जहाँ सर्वनाम को संज्ञा का स्थानापन्न कहते हैं । संज्ञा का बार-बार प्रयोग बचाने के लिए सर्वनाम प्रयुक्त होते हैं। संस्कृत में भी प्रायः इसी अर्थ में सर्वनाम शब्द आते हैं । पाणिनि ने सर्व आदि कुल पैंतीस (35) शब्दों को सर्वनाम कहा है (सर्वादीनि सर्वनामानि) इनके शब्दरूप अन्य प्रातिपदिक शब्दों से कुछ भिन्न होते हैं । सर्वनामों में भी सभी लिङ्ग रहते हैं । केवल युष्मद् और अस्मद् का रूप सभी लिङ्गों के लिए एक समान होता है अर्थात् इनमें लिङ्गगत वैशिष्ट्य नहीं रहता । अन्य सभी सर्वनामों के पृथक्-पृथक् लिङ्गों में भिन्न

रूप होते हैं । जैसे-**सर्व** का **पुंल्लिङ्ग** रूप **सर्वः सर्वौ-सर्वे** इत्यादि है तो **स्त्रीलिङ्ग** में **सर्वा - सर्वे - सर्वाः** है, **नपुंसकलिङ्ग** में **सर्वम्-सर्वे सर्वाणि** इत्यादि है ।

सर्वनामों में तद्, यद्, इदम्, अदस्, युष्मद्, अस्मद्, भवत् और किम् के प्रयोग बहुत प्रचलित हैं इसलिए सामान्यतः इनके रूपों पर पर्याप्त बल दिया जाता है । यह ध्यातव्य है कि युष्मद् और अस्मद् के रूप कुछ जटिल हैं । इनके प्रातिपदिक रूप केवल बहुवचनों में ही दिखाई पड़ते हैं । एकवचन, द्विवचन में न अस्मद् का पता रहता है, न युष्मद् का । इन पर ध्यान देना चाहिए । यह भी ध्यातव्य है कि दिशा वाचक पूर्व, दक्षिण और उत्तर शब्द तो सर्वनाम हैं, पश्चिम नहीं । इसी प्रकार संख्या वाचक एक और द्वि सर्वनाम हैं अन्य संख्याएँ सर्वनाम नहीं हैं ।

जिस संज्ञा के स्थान में सर्वनाम आता है उसके उस संज्ञा के लिङ्ग और वचन का ग्रहण करता है । जैसे इयं गङ्गा नदी, तस्यां वर्षपर्यन्तं जलं वर्तते । यहाँ नदी स्त्रीलिङ्ग है इसलिए उसका सर्वनाम 'तस्याम्' भी स्त्रीलिङ्ग एकवचन है । उसका सार्वनामिक विशेषण "इयम्" भी वैसा ही है । निम्नलिखित वाक्यांशों में रेखांकित पद सर्वनाम हैं- उत्तरस्य तडागस्य, अन्यस्यां (अपरस्यां) नद्याम्, अपराणि फलानि, एकं पुस्तकम्, उभौ बालकौ, सर्वेभ्यः जनेभ्यः, दक्षिणस्यै दिशायै, एकस्याः नार्याः, सर्वाभिः बालिकाभिः, कस्याः नगर्याः आगच्छसि ? उत्तरस्मिन् भागे हिमालयः, पूर्वस्यां दिशायाम् - ये सार्वनामिक विशेषण हैं किन्तु संस्कृत में सर्वनाम ही हैं ।

(ख) विशेषण - किसी अन्य पद की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं । "विशेषण" सापेक्ष शब्द है इसलिए इसका विशेष्य के साथ सम्बन्ध होता है । विशेष्य की ही विशेषता विशेषण प्रकट करता है । वह विशेष्य सुबन्त या तिङन्त कोई भी हो सकता है, इसलिए विशेषण के दो भेद होते हैं -

1. सामान्यविशेषण जो सुबन्त की विशेषता बताता है ।
2. क्रियाविशेषण जो तिङन्त अथवा उसके स्थानापन्न क्रिया रूप में प्रयुक्त कृदन्त

की विशेषता बताता है। सामान्यतः इन दोनों को पृथक् माना जाता है क्योंकि इनके प्रयोग की विशेषताएँ पृथक्-पृथक् होती हैं ।

यहाँ (सामान्य) विशेषण की विवेचना की जाती है । यह विशेषण विशेष्य का अन्धानुकरण करता है । व्याकरण के वचन, लिङ्ग तथा विभक्ति की दृष्टि से जो स्थिति विशेष्य की होती है वही विशेषण की भी रहती है । इन उदाहरणों में इसे देख सकते हैं – सुन्दरं पुष्पम्, लघूनि चित्राणि, निपुणस्य छात्रस्य, गभीरायां नद्याम्, अस्मिन् गृहे, मूर्खायाः दास्याः, दुर्बलयोः बालकयोः, धवले वस्त्रे, उत्कृष्टानि फलानि, जीर्णात् गृहात्, निर्धनेभ्यः छात्रेभ्यः इत्यादि ।

विशेषण का स्वरूप जैसा होगा (अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त आदि) उस शब्द के ढाँचे पर ही इसका रूप चलेगा । जैसे अकारान्त विशेषण का पुँल्लिङ्ग में 'बालक' के समान, नपुंसकलिङ्ग में 'फल' के समान और स्त्रीलिङ्ग आकारान्त हो जाने पर 'लता' के समान रूप होगा । नीचे के उदाहरण देखें –

शीतल (ठंढा) – पुँल्लिङ्ग – शीतलः, शीतलौ, शीतलाः
स्त्रीलिङ्ग – शीतला, शीतले, शीतलाः
नपुंसकलिङ्ग – शीतलम्, शीतले, शीतलानि

अन्य स्वरों से अन्त होने वाले विशेषणों के रूप उनके संज्ञा-रूपों के समान होते हैं ।

जैसे – लघु (छोटा) का रूप –

पुं. – लघुः लघू, लघवः

नपुं – लघु लघुनी, लघूनि (मधु के समान)

नीचे कुछ उपयोगी विशेषण दिए जाते हैं –

रंगसम्बन्धी – सफेद = श्वेतः । काला = कृष्णः, श्यामः । लाल = रक्तः अरुणः । पीला = पीतः । नीला = नीलः ।

आकारसम्बन्धी - छोटा = ह्रस्वः, लघुः । बड़ा = विशालः, महान् । मोटा = स्थूलः, पीनः । लम्बा = दीर्घः लम्बः । पतला = कृशः, क्षीणः । लंगड़ा = खञ्जः ।

स्वभावसम्बन्धी - अच्छा = सुशीलः, सज्जनः, शोभनः, उत्तमः, सुन्दरः (अर्थ के अनुसार प्रयोग होता है)। सबसे अच्छा = श्रेष्ठः । सुस्त = मन्दः । चालाक = चतुरः, निपुणः, कुशलः । चंचल = चपलः, चञ्चलः । तेज = तीव्रः । बुरा = दुष्टः । पढ़ा-लिखा = शिक्षितः ।

गुणसम्बन्धी - कड़ा = कठोरः । मजबूत = दृढः, सबलः । कमजोर = दुर्बलः । सूखा = शुष्कः । गीला = आर्द्रः । ठंढा = शीतः, शीतलः । गर्म = उष्णः। महीन = सूक्ष्मः । मुलायम = कोमलः, मृदुलः । रूखा = रूक्षः । तीखा = तीक्ष्णः । कड़वा = कटुः । तीता = तिक्तः । गरीब = निर्धनः, दरिद्रः । धनी = धनिकः, धनी । मीठा = मधुरः, मिष्टः । खट्टा = अम्लः । कसेला = कषायः ।

मूलतः सर्वनाम रहने वाले शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं । इनमें भी विशेष्य के अनुसार लिङ्ग, वचन तथा विभक्ति का प्रयोग होता है । इनका संस्कृत भाषा के दैनिक व्यवहार में बहुत महत्त्व है । इदम् (तीनों लिङ्ग), अदस् (तीनों लिङ्ग), यद् (तीनों लिङ्ग), तद् (तीनों लिङ्ग), एतद् (तीनों लिङ्ग) एवं किम् (तीनों लिङ्ग)- इनका प्रयोग बहुत अधिक देखा जाता है, इसलिए इनके रूपों को संस्कृत वाग्धारा की दृष्टि से स्मरण रखना आवश्यक है । कुछ उदाहरण देखें - के के बालकाः सन्ति ?(कौन-कौन लड़के हैं ?) ।

एतस्य गृहस्य (इस घर का) ।

असौ बालकः (वह लड़का) ।

अस्याः बालिकायाः (इस लड़की का) ।

कस्यां पाठशालायाम् (किस पाठशाला में) ।

तेषां छात्राणाम् (उन छात्रों का) ।

तानि पुष्पाणि (वे फूल) ।

तस्मात् नगरात् (उस शहर से)

इसी प्रकार सैकड़ों उदाहरण बनाने का प्रयास करें ।

इस प्रसंग में अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषणों का भी प्रयोग सीखना चाहिए । प्रश्नवाचक सर्वनाम (तथा अव्यय) से 'चित्' या 'चन' लगाने पर अनिश्चय-वाचक शब्द (सार्वनामिक विशेषण या अव्यय) बन जाते हैं। विशेषण में चित्, चन के पूर्व ऊपर के अनुसार विभक्ति लगती है। उदाहरण देखें –

कोई लड़का (कः + चित् = कश्चित् बालकः)

किसी लड़की को (काम् + चित् = काञ्चित् बालिकाम्)

(यहाँ सन्धि के नियम लगते हैं) ।

किसी जगह से (कस्मात् + चित् = कस्माच्चित् स्थानात्)

कुछ फूलों को (कानि + चित् = कानिचित् पुष्पाणि)

किसी शहर में (कस्मिन् + चित् = कस्मिंश्चित् नगरे)

चित् के स्थान पर 'चन' (हलन्त नहीं) तथा 'अपि' का प्रयोग भी देखा जाता है किन्तु सन्धि के नियमों का पालन आवश्यक है । उदाहरण –

किसी नदी में = कस्याञ्चित्, कस्याञ्चन, कस्यामपि नद्याम् । कुछ मनुष्यों का = केषाञ्चित्, केषाञ्चन, केषामपि मनुष्याणाम् ।

(ग) क्रियाविशेषण – ऊपर कहा गया है कि विशेषण का ही एक भेद क्रिया-विशेषण है जो तिङन्त या क्रियारूप में प्रयुक्त कृदन्त की विशेषता बतलाता है । क्रिया

की विशेषता का अर्थ है उसके प्रकार, स्थान, काल इत्यादि का बोध कराना । इसलिए क्रियाविशेषण इन लक्ष्यों की पूर्ति करते हैं । क्रियाविशेषण अव्यय के रूप में हो जाते हैं इसलिए इनमें लिङ्ग, वचन, विभक्ति का प्रश्न नहीं उठता, सदा एकरूप रहते हैं । कुछ लोगों ने भ्रमवश 'क्रियाविशेषणे द्वितीया' के रूप में नियम बनाया है । वस्तुतः यह व्यर्थ है । अव्यय के स्वरूप के अनुसार किसी शब्द में 'अम्' लगा हो तो वह द्वितीयान्त नहीं होता ।

क्रियाविशेषण अव्यय होते हैं इसलिए अव्ययों के तीनों भेद (मूल अव्यय, प्रत्ययान्त अव्यय तथा अव्ययीभाव समास) यहाँ गृहीत होते हैं । उदाहरण देखें –

मूल अव्यय – वृक्षात् फलं **पृथक्** भवति ।
स **प्रातः** गमिष्यति ।
त्वं **पुनः** समागतः असि ।
पण्डितः **उच्चैः** वदति ।

प्रत्ययान्त अव्यय– अहम् **अन्यत्र** पठिष्यामि (स्थानवाचक) ।
इदम् **उभयथा** सिध्यति (प्रकारवाचक) ।
यदा सः आगतः **तदा** वृष्टिः जाता (कालवाचक)।
शिक्षकः **कथञ्चित्** चलति (प्रकारवाचक) ।

अव्ययीभाव समास– अहं **यथाशक्ति** करिष्यामि ।
प्रधानाध्यापकः **उपविद्यालयं** समागतः ।
छात्राः **प्रतिदिनं** परिश्रमं कुर्वन्ति ।

4. समासस्य अवधारणा

संस्कृत भाषा में दो या अधिक सार्थक शब्दों को एक साथ मिलाकर प्रयुक्त करने की व्यवस्था है। इसे "समास" कहते हैं। इसका अर्थ है – **समसनं समासः**। अर्थात् पदों को एक साथ (सम्) रखना (असनम्)। एक साथ रखने पर उसके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं। दोनों पदों के बीच कैसा सम्बन्ध है इसके आधार पर समास के भेद होते हैं। इस सम्बन्ध को समास के विग्रह द्वारा प्रकट करते हैं। जैसे–

समास का पद –	पदों में सम्बन्ध (विग्रह)
राजपुरुषः –	राज्ञः पुरुषः।
यथाशक्ति –	शक्तिम् अनतिक्रम्य। (शक्ति की सीमा के अन्तर्गत)
पीताम्बरः –	पीतम् अम्बरं यस्य सः।
पाणिपादम् –	पाणी च पादौ च तयोः समाहारः।

समास मूलतः चार प्रकार के हैं –

अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि तथा द्वन्द्व। तत्पुरुष के अन्तर्गत कर्मधारय और द्विगु मुख्य रूप से होते हैं इसलिए कहीं-कहीं छह समासों की चर्चा दिखाई पड़ती है।

अव्ययीभाव समास – अव्यय के रूप में रहता है। इसमें प्रायः पूर्व पद के अर्थ की प्रधानता रहती है। **जैसे–**

शक्तिमनतिक्रम्य	=	यथाशक्ति।
दिनं दिनं प्रति	=	प्रतिदिनम्।
गृहस्य समीपम्	=	उपगृहम्।

तत्पुरुष समास – में उत्तर पदार्थ की प्रधानता होती है। इसमें कहीं-कहीं दोनों पदों

की विभक्तियाँ भिन्न होती हैं तो व्यधिकरण तत्पुरुष कहलाता है । जैसे –

ग्रामं गतः	=	ग्रामगतः । (द्वितीया तत्पुरुष)
ज्ञानेन हीनः	=	ज्ञानहीनः । (तृतीया तत्पुरुष)
व्याघ्रात् भयम्	=	व्याघ्रभयम् । (पञ्चमी तत्पुरुष)
गङ्गायाः जलम्	=	गङ्गाजलम् । (षष्ठी तत्पुरुष)
काव्ये प्रवीणः	=	काव्यप्रवीणः । (सप्तमी तत्पुरुष)

पूर्वपद की विभक्ति के अनुसार इसके भेद किए गये हैं ।

- तत्पुरुष समास में कभी-कभी दोनों पदों की विभक्तियाँ समान होती हैं, तब उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे-

नीलं कमलम्	=	नीलकमलम्
वीरः पुरुषः	=	वीरपुरुषः
घन इव श्यामः	=	घनश्यामः
कुत्सितः पुरुषः	=	कुपुरुषः

- ऐसे ही समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, तो उसे **द्विगु** कहते हैं । जैसे –

त्रयाणां लोकानां समाहारः	=	त्रिलोकी
सप्तानां शतानां समाहारः	=	सप्तशती
नवानां रात्रीणां समाहारः	=	नवरात्रम्

- 'न' का समास किसी पद के साथ होने से उसे ''नञ्'' समास कहते हैं । न का

व्यञ्जन के पूर्व 'अ' तथा स्वर के पूर्व 'अन्' हो जाता है। जैसे–

न मोघः = अमोघः

न सिद्धः = असिद्धः

न अर्थः = अनर्थः

न आगतः = अनागतः

➲ बहुव्रीहि समास में दोनों पदों के अर्थों से भिन्न अन्य पदार्थ की प्रधानता होती है। जैसे –

दश आननानि यस्य सः = दशाननः (अर्थात् रावण)

पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः (अर्थात् विष्णु)

वीणा पाणौ यस्याः सा = वीणापाणिः (अर्थात् सरस्वती)

➲ **द्वन्द्वसमास** – 'च' के अर्थ में होता है, इसलिए इसमें दोनों पदों के अर्थों की प्रधानता होती है। जैसे –

रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ

सुखं च दुःखं च = सुखदुःखे

पिता च पुत्रश्च = पितापुत्रौ

सीता च गीता च = सीतागीते

यह स्मरणीय है कि सन्धि के समान समास भी संस्कृत भाषा की विशिष्टता है जिससे भाषा में संक्षेपण, अभिनव अर्थ का प्रकाशन एवं बहुव्रीहि समास के प्रयोग से

व्यञ्जना वाले अर्थ भी लाए जाते हैं ।

5. पत्रलेखनम् (आवश्यक निर्देश)

पत्रलेखन द्वारा व्यक्तियों के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान दूर रह कर भी होता है । प्राचीन काल से ही इसका महत्त्व रहा है । जिस व्यक्ति को पत्र लिखा जाता है उसकी स्थिति के अनुसार आरम्भ में सम्बोधन किया जाता है । पुनः शिष्टाचार के अनुसार प्रणाम, आशीर्वाद, विनम्रता-प्रदर्शन इत्यादि औपचारिक रूप से आवश्यक हैं। पत्र का मुख्य भाग वर्णनात्मक, सूचनात्मक अथवा निबन्धात्मक भी हो सकता है । पत्र के अन्त में पत्र लिखने वाला अपना नाम देने के पूर्व अपने सम्बन्ध के अनुसार शब्दों का प्रयोग करता है । पत्र में तीन मुख्य औपचारिक अंग होते हैं जो इसके मूल भाग के अतिरिक्त हैं -

1. सम्बोधन, 2. अभिवादन तथा **3. समापन** । जहाँ तक सम्बोधन का प्रश्न है **बड़े लोगों के लिए मान्यवराः, आदरणीयाः, पूज्याः, मान्याः** इत्यादि लिखे जाते हैं। **मित्रों के लिए प्रिय, प्रियमित्र, बन्धुवर** अथवा **प्रिय के बाद नाम का** प्रयोग भी होता है । **छोटों के लिए** भी **प्रिय, चिरञ्जीवी, आयुष्मान्,** इत्यादि लिखे जाते हैं । औपचारिक पत्र या आवेदन में मान्यवर, महोदय, इत्यादि लिखना समीचीन है । **अभिवादन के लिए प्रणामाः, चरणस्पर्शः** इत्यादि लिखा जाता है । मित्रों को **नमस्ते, नमामि, प्रणमामि** इत्यादि लिखना उचित है । पत्र का **समापन करते हुए भवदीयः, स्नेहभाजनः, आज्ञाकारी, शुभचिन्तकः, कृपाकांक्षी** इत्यादि शब्द आवश्यकता के अनुसार आते हैं । उदाहरण - पिता को पत्र

पूज्याः पितृचरणाः पाटलिपुत्रम्

सादरं प्रणामाः सन्तु दिनाङ्कः ....

अहम् अत्र कुशलपूर्वकं पठामि । प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छामि । छात्रावासे

निवासस्य भोजनस्य च व्यवस्था उचिता वर्तते । अत: भवान् चिन्तां न करोतु । सर्वे सहवासिन: सहयोगं कुर्वन्ति । सायंकाले उद्याने क्रीडा भवति । तया शरीरस्य व्यायाम: जायते । विद्यालये शिक्षका: सर्वे योग्या: सन्ति । छात्रान् पुत्रवत् ते मन्यन्ते । ग्रीष्मावकाशे आगमिष्यामि ।

भवदीय: स्नेहभाजन:

आत्मज: ....

आवेदन पत्र (प्रधानाचार्य के पास)

सेवायाम्

श्रीमन्त: प्रधानाचार्यमहोदया:,

मध्यविद्यालय:, कृष्णपुरम्

विषय: – अवकाशार्थम् आवेदनम् ।

मान्यवरा: !

सविनयं निवेदयामि यत् मम अग्रजाया: विवाहसमारोह: 26.02.2012 दिनाङ्के आयोजित: भविष्यति । अत: अहं स्वकक्षायां पञ्चदिवसान् अनुपस्थित: भविष्यामि । मम प्रार्थना वर्तते यत् 23.2.2012 दिनाङ्कात् 27.2.2012 दिनाङ्कं यावत् मह्यम् अवकाशप्रदानस्य कृपां कुर्वन्तु भवन्त: । तदर्थम् अहं सर्वदा कृतज्ञ: भविष्यामि ।

भवदीया आज्ञाकारिणी छात्रा

....

अनुच्छेदलेखनम्

अनुच्छेद किसी बड़े निबन्ध का एक खण्ड होता है जिसमें एक विषय से सम्बद्ध कई वाक्य रहते हैं । निबन्ध में लेखक विषयान्तर में भी जा सकता है किन्तु अनुच्छेद में यह सम्भव नहीं । विषयवस्तु का अनुशासन यहाँ बहुत प्रभावशाली होता है । इसलिए एक वाक्य भी तारतम्य से रहित नहीं हो सकता । आकार में लघु होने के कारण अनुच्छेद लिखने वाले के बौद्धिक संयम तथा अनुशासन का परिचायक होता है। व्यक्तियों की जीवनी, ऋतुओं का वर्णन, पर्वत-नदी का वर्णन, छात्रजीवन से सम्बद्ध विषय, मानवीय गुण, उत्सव आदि के विषय में प्रायः अनुच्छेद-लेखन की आवश्यकता है । यहाँ कुछ अनुच्छेद दिए जाते हैं ।

1. **गङ्गा नदी** - गङ्गा अस्माकं देशस्य श्रेष्ठा पूजनीया च नदी वर्तते । हिमालयपर्वतात् इयं नि:सरति । उत्तराखण्डे गङ्गोत्तरीनामके स्थाने अस्याः उद्गमः वर्तते । तत्र हिमशिलायाः इयं निर्गता । उत्तरप्रदेशे विहारे वङ्गप्रदेशे च भूमिं सा सिञ्चति । इयं बहुलाभप्रदा वर्तते ।

2. **विद्यालयः** - छात्राणां हिताय विद्यालयस्य महत्त्वपूर्णं स्थानम् अस्ति । विद्यालये अनेकाः कक्षाः भवन्ति । तासु शिक्षकाः छात्रान् विविधान् विषयान् पाठयन्ति । प्रधानाध्यापकः विद्यालयस्य नियन्त्रणं करोति । विद्यालये छात्राणां सदाचारस्य शिक्षणमपि भवति ।

3. **छात्रजीवनम्** - जीवनस्य प्रथमः चरणः छात्रजीवनम् एव । प्राचीनभारते ब्रह्मचर्याश्रमः भवति स्म । स एव सम्प्रति छात्रजीवने दृश्यते । अस्मिन् जीवने एव शारीरिकः, मानसिकः च परिश्रमः भवति । तस्य जीवनपर्यन्तं फलं जायते।

अनुशासनं विद्याध्ययनं च छात्राणां परमं कर्तव्यं भवति ।

6. शब्द रूपाणि

सखि (मित्र)

इकारान्त (पुँल्लिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधनम्	हे सखे!	हे सखायौ !	हे सखायः

मुनि

इकारान्त (पुँल्लिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधनम्	हे मुने!	हे मुनी !	हे मुनयः

नोट : कवि, हरि, ऋषि, रवि, अग्नि, कपि (बन्दर), अरि (शत्रु) भूपति/ नृपति (राजा) जलधि/उदधि (समुद्र), व्याधि (रोग) इत्यादि शब्दों के रूप मुनि के समान होते हैं।

पति (स्वामी, भर्ता)

इकारान्त (पुँल्लिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्

तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधनम्	हे पते!	हे पती!	हे पतयः!

साधु

उकारान्त (पुँल्लिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधनम्	हे साधो !	हे साधू !	हे साधवः!

नोट : गुरु, वायु, शम्भु, मृत्यु, भानु (सूर्य), बन्धु, तरु, ऋतु, शिशु, बहु (बहुत) विधु (चन्द्रमा) पशु आदि शब्दों के रूप साधु के समान होते हैं ।

भ्रातृ (भाई)

ऋकारान्त (पुँल्लिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातृन्
तृतीया	भ्रात्रा	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः
चतुर्थी	भ्रात्रे	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः
पञ्चमी	भ्रातुः	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
षष्ठी	भ्रातुः	भ्रात्रोः	भ्रातृणाम्
सप्तमी	भ्रातरि	भ्रात्रोः	भ्रातृषु
सम्बोधनम्	हे भ्रातः !	हे भ्रातरौ !	हे भ्रातरः!

नोट – पितृ (पिता), जामातृ (दामाद), देवृ (देवर), नृ (नर) आदि शब्दों के रूप भ्रातृ के समान होते हैं।

लता

आकारान्त (स्त्रीलिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभयाम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधनम्	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

नोट : कन्या/सुता (बेटी), भार्या (पत्नी), कृपा, दया, सन्ध्या, निशा/क्षपा(रात) नासिका(नाक), अजा (बकरी), पूजा, शय्या, महिला, सुधा (अमृत), कथा, कविता, रोटिका आदि शब्दों के रूप लता के समान होते हैं।

धेनु (दूध देनेवाली गाय)

उकारान्त (स्त्रीलिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै/धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः/धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः/धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्/धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधनम्	हे धेनो !	हे धेनू!	हे धेनवः !

नोट – तनु (शरीर), रेणु (धूल) इत्यादि शब्दों रूप धेनु की तरह होते हैं।

मातृ (माता)

ऋकारान्त (स्त्रीलिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधनम्	हे मातः!	हे मातरौ !	हे मातरः !

महत् (बड़ा)

पुँल्लिङ्गम्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृतीया	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
चतुर्थी	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पञ्चमी	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
षष्ठी	महतः	महतोः	महताम्
सप्तमी	महति	महतोः	महत्सु
सम्बोधनम्	हे महान् !	हे महान्तौ !	हे महान्तः !

नोट : महत् का स्त्रीलिङ्ग महती (बड़ी) के रूप नदी की तरह होता है ।

नामन् (नाम)

क्लीबलिङ्गम्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	नाम	नाम्नी/नामनी	नामानि
द्वितीया	नाम	नाम्नी/नामनी	नामानि
तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
चतुर्थी	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पञ्चमी	नाम्नः	नामाभ्याम्	नामभ्यः
षष्ठी	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्

सप्तमी	नाम्नि	नाम्नोः	नामसु
सम्बोधनम्	हे नाम!/	हे नाम्नी!/	हे नामानि !
	हे नामन् !	हे नामनी!	

नोट : व्योमन् (आकाश) धामन् (घर), दामन् (रस्सी), प्रेमन् (प्यार) आदि शब्दों के रूप नामन् की तरह होते हैं।

पयस् (जल)

क्लीबलिङ्गम्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
तृतीया	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
चतुर्थी	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पञ्चमी	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
षष्ठी	पयसः	पयसोः	पयसाम्
सप्तमी	पयसि	पयसोः	पयःसु/पयस्सु
सम्बोधनम्	हे पयः !	हे पयसी!	हे पयांसि!

नोट : वचस् (वाणी), नभस् (आकाश), सरस् (तालाब), वयस् (उम्र), मनस् आदि शब्दों के रूप पयस् के समान होते हैं।

कर्मन्

क्लीबलिङ्गम्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
द्वितीया	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
तृतीया	कर्मणा	कर्मभ्याम्	कर्मभिः
चतुर्थी	कर्मणे	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः
पञ्चमी	कर्मणः	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः
षष्ठी	कर्मणः	कर्मणोः	कर्मणाम्
सप्तमी	कर्मणि	कर्मणोः	कर्मसु
सम्बोधनम्	हे कर्म !	हे कर्मणी	हे कर्माणि!

नोट : जन्मन्, सद्मन् (घर) आदि शब्दों के रूप कर्मन् की तरह होते हैं।

भवत् (आप)

पुँल्लिङ्गम्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधनम्	हे भवन् !	हे भवन्तौ !	हे भवन्तः !

नोट : भवत् का स्त्रीलिङ्ग भवती (आप) है जिसका रूप नदी की तरह होता है।

एक (एक)

विभक्तिः	पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि (दो)

विभक्तिः	पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

नोट : ('द्वि' शब्द के रूप केवल द्विवचन में होते हैं)

त्रि (तीन)

विभक्तिः	पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

नोट : 'त्रि' से लेकर आगे की संख्याओं के रूप केवल बहुवचन में होते हैं।

चतुर् (चार)

विभक्तिः	पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

नोट – पञ्चन्, षष्, सप्तन्, आदि संख्यावाची शब्दों के रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं और केवल 'बहुवचन' में होते हैं।

पञ्चन् – पाँच

विभक्तिः	–	पुँल्लिङ्गम्
प्रथमा	–	पञ्च
द्वितीया	–	पञ्च
तृतीया	–	पञ्चभिः
चतुर्थी	–	पञ्चभ्यः
पञ्चमी	–	पञ्चभ्यः
षष्ठी	–	पञ्चानाम्

सप्तमी	-	पञ्चसु

7. धातुरूपाणि

दृश् - देखना (परस्मैपदी)

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पश्यति	पश्यत:	पश्यन्ति
मध्यमपुरुष:	पश्यसि	पश्यथ:	पश्यथ
उत्तमपुरुष:	पश्यामि	पश्याव:	पश्याम:

लृट्लकार: (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत:	द्रक्ष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथ:	द्रक्ष्यथ
उत्तमपुरुष:	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्याव:	द्रक्ष्याम:

लङ्लकार: (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यमपुरुष:	अपश्य:	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तमपुरुष :	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यमपुरुष:	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तमपुरुष :	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयु:
मध्यमपुरुष:	पश्ये:	पश्येतम्	पश्येत

उत्तमपुरुष :	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

याच् – माँगना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	याचति	याचतः	याचन्ति
मध्यमपुरुषः	याचसि	याचथः	याचथ
उत्तमपुरुष :	याचामि	याचावः	याचामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ
उत्तमपुरुष :	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्
मध्यमपुरुषः	अयाचः	अयाचतम्	अयाचत
उत्तमपुरुष :	अयाचम्	अयाचाव	अयाचाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	याचतु	याचताम्	याचन्तु
मध्यमपुरुषः	याच	याचतम्	याचत
उत्तमपुरुष :	याचानि	याचाव	याचाम

विधिलिङ् लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	याचेत्	याचेताम्	याचेयुः
मध्यमपुरुषः	याचेः	याचेतम्	याचेत
उत्तमपुरुष :	याचेयम्	याचेव	याचेम

या –जाना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	याति	यातः	यान्ति
मध्यमपुरुषः	यासि	याथः	याथ

उत्तमपुरुष :	यामि	यावः	यामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	यास्यति	यास्यतः	यास्यन्ति
मध्यमपुरुषः	यास्यसि	यास्यथः	यास्यथ
उत्तमपुरुष :	यास्यामि	यास्यावः	यास्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अयात्	अयाताम्	अयान्, अयुः
मध्यमपुरुषः	अयाः	अयातम्	अयात
उत्तमपुरुष :	अयाम्	अयाव	अयाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	यातु	याताम्	यान्तु
मध्यमपुरुषः	याहि	यातम्	यात
उत्तमपुरुष :	यानि	याव	याम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	यायात्	यायाताम्	यायुः
मध्यमपुरुषः	यायाः	यायातम्	यायात
उत्तमपुरुष :	यायाम्	यायाव	यायाम

दिव् - चमकना, जुआ खेलना (परस्मैपदी)

लट्लकारः

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
मध्यमपुरुषः	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उत्तमपुरुष :	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ

उत्तमपुरुष :	देविष्यामि	देविष्याव:	देविष्याम:

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
मध्यमपुरुष:	अदीव्य:	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उत्तमपुरुष :	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
मध्यमपुरुष:	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उत्तमपुरुष :	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयु:
मध्यमपुरुष:	दीव्ये:	दीव्येतम्	दीव्येत
उत्तमपुरुष :	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

आप् – प्राप्त करना (परस्मैपदी)

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	आप्नोति	आप्नुत:	आप्नुवन्ति
मध्यमपुरुष:	आप्नोषि	आप्नुथ:	आप्नुथ
उत्तमपुरुष :	आत्नोमि	आप्नुव:	आप्नुम:

लृट्लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	आप्स्यति	आप्स्यत:	आप्स्यन्ति
मध्यमपुरुष:	आप्स्यसि	आप्स्यथ:	आप्स्यथ
उत्तमपुरुष :	आप्स्यामि	आप्स्याव :	आप्स्याम :

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यमपुरुष:	आप्नो :	आप्नुतम्	आप्नुत

उत्तमपुरुष :	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लोट्लकारः

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यमपुरुषः	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तमपुरुष :	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यमपुरुषः	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तमपुरुष :	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

इष् - इच्छा करना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यमपुरुषः	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तमपुरुष :	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तमपुरुष :	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यमपुरुषः	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तमपुरुष :	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यमपुरुषः	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत

उत्तमपुरुष :	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यमपुरुषः	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तमपुरुष :	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

प्रच्छ्-पूछना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यमपुरुषः	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तमपुरुष :	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तमपुरुष :	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यमपुरुषः	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तमपुरुष :	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यमपुरुषः	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तमपुरुष :	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यमपुरुषः	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तमपुरुष :	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

क्री - खरीदना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
मध्यमपुरुषः	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उत्तमपुरुष :	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उत्तमपुरुष :	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
मध्यमपुरुषः	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उत्तमपुरुष :	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
मध्यमपुरुषः	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उत्तमपुरुष :	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
मध्यमपुरुषः	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीयीयात

उत्तमपुरुष :	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

चुर् = चोरी करना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्त्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यमपुरुषः	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तमपुरुष :	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तमपुरुष :	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यमपुरुषः	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तमपुरुष :	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यमपुरुषः	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तमपुरुष :	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यमपुरुषः	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तमपुरुष :	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

चिन्त् = सोचना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्त्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
मध्यमपुरुषः	चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ

उत्तमपुरुष :	चिन्तयामि	चिन्तयाव:	चिन्तयाम:

लृट्लकार: (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यत:	चिन्तयिष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथ:	चिन्तयिष्यथ
उत्तमपुरुष :	चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्याव:	चिन्तयिष्याम:

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
मध्यमपुरुष:	अचिन्तय:	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
उत्तमपुरुष :	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
मध्यमपुरुष:	चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत
उत्तमपुरुष :	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयु:
मध्यमपुरुष:	चिन्तये:	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत
उत्तमपुरुष :	चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम

पूज् = पूजा करना

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पूजयति	पूजयत:	पूजयन्ति
मध्यमपुरुष:	पूजयसि	पूजयथ:	पूजयथ
उत्तमपुरुष :	पूजयामि	पूजयाव:	पूजयाम:

लृट्लकार: (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पूजयिष्यति	पूजयिष्यत:	पूजयिष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	पूजयिष्यसि	पूजयिष्यथ:	पूजयिष्यथ

उत्तमपुरुष :	पूजयिष्यामि	पूजयिष्याव:	पूजयिष्याम:

लङ्लकार: (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अपूजयत्	अपूजयताम्	अपूजयन्
मध्यमपुरुष:	अपूजय:	अपूजयतम्	अपूजयत
उत्तमपुरुष :	अपूजयम्	अपूजयाव	अपूजयाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पूजयतु	पूजयताम्	पूजयन्तु
मध्यमपुरुष:	पूजय	पूजयतम्	पूजयत
उत्तमपुरुष :	पूजयानि	पूजयाव	पूजयाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पूजयेत्	पूजयेताम्	पूजयेयु:
मध्यमपुरुष:	पूजये:	पूजयेतम्	पूजयेत
उत्तमपुरुष :	पूजयेयम्	पूजयेव	पूजयेम

नम् - नमस्कार करना, झुकना (परस्मैपदी)

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	नमति	नमत:	नमन्ति
मध्यमपुरुष:	नमसि	नमथ:	नमथ
उत्तमपुरुष :	नमामि	नमाव:	नमाम:

लृट्लकार: (सामान्य भविष्यकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	नंस्यति	नंस्यत:	नंस्यन्ति
मध्यमपुरुष:	नंस्यसि	नंस्यथ:	नंस्यथ
उत्तमपुरुष :	नंस्यामि	नंस्याव:	नंस्याम:

लङ्लकार: (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
मध्यमपुरुष:	अनम:	अनमतम्	अनमत

उत्तमपुरुष :	अनमम्	अनमाव	अनमाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नमतु	नमताम्	नमन्तु
मध्यमपुरुषः	नम	नमतम्	नमत
उत्तमपुरुष :	नमानि	नमाव	नमाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
मध्यमपुरुषः	नमेः	नमेतम्	नमेत
उत्तमपुरुष :	नमेयम्	नमेव	नमेम

घ्रा (जिघ्र्) = सूँघना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
मध्यमपुरुषः	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
उत्तमपुरुष :	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति
मध्यमपुरुषः	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
उत्तमपुरुष :	घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
मध्यमपुरुषः	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
उत्तमपुरुष :	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जिघ्रतु	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु
मध्यमपुरुषः	जिघ्र	जिघ्रतम्	जिघ्रत

उत्तमपुरुष :	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
मध्यमपुरुषः	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
उत्तमपुरुष :	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम

पा (पिब्) = पीना (परस्मैदी)

लट्लकारः (वर्त्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यमपुरुषः	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तमपुरुष :	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यमपुरुषः	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तमपुरुष :	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अपिबत्	अपितबताम्	अपिबन्
मध्यमपुरुषः	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तमपुरुष :	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यमपुरुषः	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तमपुरुष :	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यमपुरुषः	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत

उत्तमपुरुष :	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

नृत् (नृत्य) = नाचना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यमपुरुषः	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तमपुरुष :	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उत्तमपुरुष :	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यमपुरुषः	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तमपुरुष :	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यमपुरुषः	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तमपुरुष :	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यमपुरुषः	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत

उत्तमपुरुष :	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

हस् - हँसना (परस्मैपदी)

लट्लकार: (वर्त्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	हसति	हसत:	हसन्ति
मध्यमपुरुष:	हससि	हसथ:	हसथ
उत्तमपुरुष :	हसामि	हसाव:	हसाम:

लृट्लकार: (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	हसिष्यति	हसिष्यत:	हसिष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	हसिष्यसि	हसिष्यथ:	हसिष्यथ
उत्तमपुरुष :	हसिष्यामि	हसिष्याव:	हसिष्याम:

लङ्लकार: (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
मध्यमपुरुष:	अहस:	अहसतम्	अहसत
उत्तमपुरुष :	अहसम्	अहसाव	अहसाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यमपुरुष:	हस	हसतम्	हसत
उत्तमपुरुष :	हसानि	हसाव	हसाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	हसेत्	हसेताम्	हसेयु:
मध्यमपुरुष:	हसे:	हसेतम्	हसेत

उत्तमपुरुष :	हसेयम्	हसेव	हसेम

8. संस्कृत - सम्भाषणम्

सुप्रभातम्	=	सुप्रभात (Good Morning)
प्रणमामि / नमस्ते / नमस्कार:	=	नमस्ते, प्रणाम
शुभरात्रि:	=	शुभरात्रि (Good-night)
धन्यवादा:	=	धन्यवाद
अस्तु / आम्	=	जी हाँ / ठीक है
स्वागतम्	=	स्वागत
चिन्ता मास्तु	=	कोई बात नहीं
क्षम्यताम्	=	क्षमा करें
अथ किम् ?	=	और क्या ?
भवतु	=	जी !
आगच्छतु	=	आइए
उपविशतु	=	बैठिए
किम् अन्यत् ?	=	और क्या ?
तथैव अस्तु	=	जी हाँ / ऐसा ही हो
भवत: नाम किम् ?	=	आपका (पुं.) नाम क्या है ?
मम नाम रोहित: अस्ति	=	मेरा नाम रोहित है।
भवत्या: नाम किम् ?	=	आपका (स्त्री.) नाम क्या है ?
मम नाम शाम्भवी	=	मेरा नाम शाम्भवी है।
आगच्छानि महोदय ?	=	श्रीमान्, क्या मैं आऊँ ?
स्वैरम् आगच्छ	=	सहर्ष आ जाओ
जलं पातुं गच्छानि किम्	=	क्या मैं जल पीने जाऊँ ?
त्वं कस्मिन् विद्यालये पठसि?	=	तुम किस विद्यालय में पढ़ते हो ?
अहं मध्यविद्यालये पठामि	=	मैं मध्यविद्यालय में पढ़ता हूँ।

त्वं कस्यां कक्षायां पठसि ?	=	तुम किस कक्षा में पढ़ते हो ?
अहम् अष्टमकक्षायां पठामि	=	मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।
तव विद्यालये कति शिक्षकाः सन्ति?	=	तुम्हारे विद्यालय में कितने शिक्षक हैं ?
मम विद्यालये दश शिक्षकाः सन्ति	=	मेरे विद्यालय में दस शिक्षक हैं।
तव पितुः नाम किम् ?	=	तुम्हारे पिता का क्या नाम है ?
मम पितुः नाम श्रीरविदासः अस्ति	=	मेरे पिता का नाम श्री रविदास है
इदानीं कः समयः ?	=	इस समय क्या बजा है ?
इदानीं त्रिवादनम् अस्ति	=	अभी तीन बजे हैं।
अहं सपादत्रिवादने गमिष्यामि	=	मैं सवा तीन बजे जाऊँगा।
पादोन-षड्वादने जलपानं करिष्यामि	=	पौने छह बजे जलपान करूँगा।
सार्ध - नववादने विद्यालयं गमिष्यामि	=	साढ़े नव बजे विद्यालय जाऊँगा।
सोमवासरे कः दिनाङ्कः भविष्यति ?	=	सोमवार को कौन-सी तिथि (तारीख) होगी ?
सोमवासरे पञ्चदश दिनाङ्कः अस्ति	=	सोमवार को पन्द्रह तारीख है।
एकविंशतिदिनाङ्के कः वासरः ?	=	इक्कीस तारीख को कौन सा वार (दिन) होगा?
एकविंशतिदिनाङ्के रविवासरः भविष्यति	=	इक्कीस तारीख को रविवार होगा।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

QQQ

Developed by: ABSOL www.absol.in

व् दन्तोष्ठ्य हैं । **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं– श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

व् दन्तोष्ठ्य हैं । **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

व् दन्तोष्ठ्य हैं । **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

व् दन्तोष्ठ्य हैं । **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

व् दन्तोष्ठ्य हैं । **ऊष्म** वर्ण भी इसी प्रकार विभक्त हैं श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) और ह (कण्ठ्य)।

अथ किम् ? अथ किम् ? अथ किम् ? अथ किम् ? अथ किम् ? अथ किम् ?